‘उसावा लिटरेरी रिव्यू’ के ‘हिंदी दिवस गिव अवे योजना’ के तहत मेरी किताब ‘स्त्री लेखन के समकाल’ में समाहित 9 लेखिकाओं और किताब की लेखिका अपनी पढ़त को सीधी सरल भाषा में व्यक्त करने वाली प्रविष्टियों को पढ़ना बहुत सुखद अनुभव रहा। खासकर ऐसे समय में जब हिंदी किताबों के पाठक कम होते जा रहे हैं और पढ़े जाने का सूचकांक लाइक की संख्या से तय हो रहे हैं।

सभी ने अलग-अलग लेखिकाओं पर बड़ी सच्चाई के साथ अपने मन पर पड़ी छाप को अपने जीवन अनुभवों से जोड़कर व्यक्त किया। सभी सुगढ़, साफ, सारगर्भित प्रतिक्रियाएं थीं। इन्हें पढ़ कर मेरी समझ के भी झरोखे खुले। यह प्रत्यक्ष प्रमाण मिला कि लेखन किस तरह अदृश्य ढंग से चेतना के रसायन को ई चुपचाप बदलता है।

इन टिप्पणियों में से किसी एक को पसंद कर पाना मेरे लिए बड़ा मुश्किल काम था। इसलिए सारी टिप्पणियां मैने चंद भरोसेमंद लेखकों को भेजी थीं कि वे पहला, दूसरा, तीसरा नाम बताएं। इस आधार पर जो नाम सबसे अधिक बार आए वह नाम चुने तो ऐसे दो नाम सामने आए—दीपक सिंह, छात्र डी.सी.ए.सी. कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी और शिवांगी पाण्डेय, ईस्ट एशियन डिपार्टमेंट, दिल्ली विश्वविद्यालय।

हालांकि एस. कुकरेती, विशाल पाण्डेय, आदित्यनाथ तिवारी, नेहा यादव, शिवी सिंह और साथ ही abstcoup नाम से अंग्रेजी में दी गई प्रतिक्रियाएं अच्छी लगीं। शादाब अहमद ने मेरी किताब पर लिखा तो गौरव मिश्रित खुशी हुई। अपने लेखन पर उनके विचार जानकर भी और इन 9 लेखिकाओं की सीध में उनके साथ मुझे भी शामिल करने पर भी। लगा कि श्रंखला की कड़ियों का हिस्सा हूं। दायित्व याद रखना होगा।

मुझे सभी को पढ़ कर खुशी हुई और आप सबकी सक्रिय भागीदारी का आभार।

दीपक सिंह, छात्र डी.सी.ए.सी. कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी और शिवांगी पाण्डेय, ईस्ट एशियन डिपार्टमेंट, दिल्ली विश्वविद्यालय।